



International Journal of Multidisciplinary Research and Development



IJMRD 2015; 2(1): 353-355
www.allsubjectjournal.com
Received: 22-12-2014
Accepted: 15-01-2015
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact factor: 3.762

डॉ. काजल पाण्डे
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
एप्लाइड एआई गुप,
प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक)
पुणे विश्वविद्यालय परिसर, गणेशखिंद, पुणे

वैश्वीकरण के दौर में अनुवाद का महत्व

डॉ. काजल पाण्डे

सारांश

मानवता की दृष्टि से सभी देशों-प्रदेशों के मनुष्य मूलतः एक हैं पर भौगोलिक सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक और भाषिक सीमाएँ उन्हें एक-दूसरे से अलग कर देती हैं। इनमें भाषा की सीमा सबसे बड़ी सीमा है। विदेशों की बात तो दूर अपने ही देश में विभिन्न प्रदेशों के लोग एक-दूसरे की भाषा न समझने के कारण एक-दूसरे से अजनबी हो जाते हैं। मानव-मन स्वभावतः सीमाओं में बंधकर रुद्ध नहीं होना चाहता। बल्कि वह इन सीमाओं को लाँघकर विश्व-भर में व्यापने के लिए तड़पता रहता है। भाषा की सीमाओं को लाँघने का सबसे बड़ा माध्यम अनुवाद है। भाषा के आविष्कार के बाद जब मनुष्य-समाज का विकास-विस्तार होता चला गया और सम्पर्कों एवं आदान-प्रदान की प्रक्रिया को अधिक फैलाने की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी तो अनुवाद ने जन्म लिया। इन दिनों अनुवाद सेवाओं की माँग काफी बढ़ी है। अनुवाद की जरूरत केवल साहित्य तथा अंतःसांस्कृतिक कार्यकलापों के संवर्द्धन के लिए नहीं है। बल्कि यह तकनीक एवं स्थानिकीकरण की प्रक्रिया के अभिन्न अंग बन चुके वैश्वीकरण के परिदृश्य में कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए भी एक अत्यावश्यक साधन है।

प्रस्तावना ॐ वैश्वीकरण की प्रक्रिया में किसी एक भाषाएँ संस्कृति और पहचान का दूसरी भाषाओंएँ संस्कृतियों एवं पहचान पर आधिपत्य स्थापित किया जा रहा है। मानवता के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती वास्तव में यह है कि वैश्विक स्तर पर अधिकांश बौद्धिक कार्य एक ही भाषा में किए जा रहे हैं वह है अंग्रेजी। इसने अनुवाद प्रक्रिया को भरपूर प्रभावित किया है और नई पहचान एवं संस्कृति के निर्माण की स्थितियाँ पैदा की हैं।

1. शिक्षा और अनुसंधान

अनुवाद की सबसे अधिक उपयोगिता वैश्वीकृत परिदृश्य में शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में अति महत्वपूर्ण है। शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान और विज्ञान की सामग्री को अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर विश्व के सभी देश और शिक्षण संस्थाएँ आपस में बाँटती हैं। यह आदान-प्रदान अनुवाद के माध्यम से ही होता है। अनुसंधान के परिणामों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आपस में अनुवाद के द्वारा ही साझा करते हैं। मनुष्य के कल्याण के लिए विश्व भर में जो भी शोध और अनुसंधान हो रहे हैं जिनमें असंख्य वैज्ञानिक कार्यरत हैं उनके नतीजे समूची मानव जाति तक पहुँचाने का काम अनुवाद द्वारा ही संभव है। उनकी जानकारी विभिन्न देशों के नागरिकों को स्थानीय भाषा में दी जाती है जिसके पीछे विशेषज्ञ अनुवादकों का परिश्रम रहता है।

2. ज्ञान-विज्ञान

सुख और दुःख की भाँति मनुष्य ज्ञान को भी दूसरों के साथ बाँट लेना चाहता है। जो वह स्वयं जानता है उसे दूसरों तक पहुँचाना चाहता है और जो दूसरे जानते हैं उसे स्वयं जानना चाहता है। इस प्रक्रिया में भाषा की सीमाएँ उसके आड़े आती हैं। इसीलिए अनुवाद वैश्वीकरण और तकनीक के आपसी सम्बंध से आज ज्ञान-विज्ञान के विकास और प्रसार का अनिवार्य साधन बन गया है।

अनुवाद के माध्यम से अपनी भाषा में अन्य भाषाओं की कृतियों को पढ़ने का अवसर मिलने पर व्यक्ति सहज ही इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक और भाषागत सीमाएँ स्वाभाविक नहीं बल्कि मनुष्य निर्मित कृत्रिम सीमाएँ हैं। वस्तुतः मानव समाज एक है। भाषा हमारे विचारों एवं भावनाओं का अनुवाद कही जा सकती है। जो हम सोचते हैं, वह शब्दों के माध्यम से लेखन में समेटने का प्रयास करते हैं। भाषा किसी हद तक ही हमारे विचारों को पकड़ पाती है। संसार में जितनी भाषाएँ मौजूद हैं उन सभी भाषाओं में सारी ज्ञान-विज्ञान की सामग्री स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध हो रही है और इसका श्रेय अनुवाद को ही जाता है।

3. भारतीय साहित्य

भाषायी सद्भावना की जब हम बात करते हैं तो अनुवाद की तरफ हमारा ध्यान जाना स्वाभाविक है। दरअसल अनुवाद वह साधन है जो श्भाषायी सद्भावना की अवधारणा को न केवल पुष्ट करता है अपितु भारतीय साहित्य एवं अस्मिता को गति प्रदान करने वाला एक सशक्त और आधारभूत माध्यम है। यह एक ऐसा अभिनन्दनीय कार्य है जो भारतीय साहित्य की अवधारणा से हमें परिचित कराता है तथा हमें सच्चे अर्थों में भारतीय बनाकर क्षेत्रीय संकीर्णताओं एवं परिसीमाओं से ऊपर उठाकर श्भारतीयता से साक्षात्कार कराता है। देश की साहित्यिक-सांस्कृतिक विरासत के दर्शन अनुवाद से ही संभव हैं। आज यदि भारतीय भाषाओं के कई यशस्वी लेखकों की रचनाएँ अनुवाद के जरिए हम तक नहीं पहुँचतीएँ तो भारतीय साहित्य सम्बंधी हमारा ज्ञान कितना सीमितएँ कितना क्षुद्र होताएँ इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। अनुवाद के माध्यम से ही हमें विश्व साहित्य को पढ़ने की सुविधा प्राप्त होती है। अनुवाद के बिना हम इस धरोहर को जानने से वंचित रह जाते।

Correspondence:

डॉ. काजल पाण्डे
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
एप्लाइड एआई गुप,
प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक)
पुणे विश्वविद्यालय परिसर, गणेशखिंद, पुणे

आज मनुष्य पहले से कहीं अधिक जिज्ञासु और शोधपरक हो गया है। मनुष्य की जिज्ञासाओं का समाधान अनुवाद द्वारा प्राप्त सामाग्री के अध्ययन से ही संभव है। किसी भी व्यक्ति के लिए संसार की सारी भाषाओं को सीखना संभव नहीं है लेकिन विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य एवं अन्य सामाग्री का उपयोग हर व्यक्ति अनूदित पाठ के माध्यम से कर सकता है। अनुवाद ने आज अभिव्यक्ति की सीमाओं का विस्तार किया है। अनुवाद वर्तमान काल की अनिवार्य आवश्यकता है।

भारत जैसे विकासशील देश में अनुवाद की स्थिति काफी अलग है। बहुभाषी देश होने के कारण यहाँ अनुवाद कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण है। विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्राचीन और आधुनिक साहित्यों के आदान-प्रदान का प्रमुख सूत्र अनुवाद ही है।

4. साहित्यिक-सांस्कृतिक-सामाजिक परिदृश्य

साहित्यिक-गतिविधि के रूप में अनुवाद को बहुत बाद में महत्व मिला। भारतीय संस्कृति की सामाजिक अस्मिता को अनुवाद के अनगिनत प्रयासों ने सौष्ठव प्रदान किया है। अनुवाद कार्य भारत की बहुआयामी सांस्कृतिक परंपराओं और उपलब्धियों के समन्वय का पर्याय कहा जा सकता है। इस सागर में भारत भूमि पर धार्मिक, वैचारिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक तथा सांस्कृतिक एकता का संगम हुआ है। समूचे देश की भौगोलिक सीमा में बिखरी सांस्कृतिक विरासतों और जीवन मूल्यों की सामाजिक छवि को अनुवाद-प्रक्रिया ने सही दिशा दी है।

अनुवाद देश और काल की सीमाओं का अतिक्रमण करने वाला एक महत्तर भाषिक साधन है। विशेष रूप से यह एक औजार या उपकरण है जो भौगोलिक आर्थिक सांस्कृतिक सामाजिक विभेदों को स्थानीय तथा वैश्विक स्तर पर दूर करके परस्पर संबंध स्थापित कर सकता है। विश्व की अनगिनत भाषाएँ आज अपनी-अपनी संस्कृतियों और जीवन की विधियों को संचालित कर रही हैं। इन विविधताओं में समन्वय स्थापित करने का एक मात्र साधन अनुवाद ही है। भाषिक वैविध्य सांस्कृतिक और सामाजिक वैविध्य को जन्म देता है किन्तु इस वैविध्य को दूर करके विभिन्न सांस्कृतिक परिवेश में सादृश्य पैदा करने की क्षमता केवल अनुवाद में ही निहित है। व्यक्ति की अभिव्यक्ति किसी भी भाषा में हो सकती है लेकिन वही अभिव्यक्ति समूचे समाज के लिए उस भाषा विशेष के ज्ञान के बिना संप्रेषणीय नहीं होगी। ऐसी अवस्था में अनुवाद ही वह एक मात्र उपकरण है जो इस कठिनाई को दूर कर सकता है।

अनुवाद ने अध्ययन और अध्यापन को व्यापकता दी है। अनुवाद ने भारतीय साहित्य के अध्येताओं को एक दूसरे के निकट लाने का प्रयास किया है। अनुवाद ने न केवल पाठकीय रूचि को अंतरराष्ट्रीय आस्वाद प्रदान किया है बल्कि अध्ययन और अनुसंधान को नई दिशाएँ भी दी है। अंतरराष्ट्रीय साहित्य के अध्ययन ने अतीत और वर्तमान के विश्व से परिचित कराया है। सारे संसार की विभिन्न भाषाओं में विभिन्न विधाओं में रचे जा रहे साहित्य के अध्ययन में संलग्न अध्येताओं के शिक्षण में भी अनुवाद की अनवरत भूमिका लक्षित होती है।

5. एकता के परिप्रेक्ष्य में

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभाजन के इस दौर में एकता की कड़ियों को जोड़ने का एक महत्वपूर्ण प्रयास अनुवाद के माध्यम से ही संभव हो सकता है। अनुवाद वह सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा राष्ट्र की एक सूत्रता को सही दिशा मिलती है। अनुवाद ने संपूर्ण राष्ट्र को एकता के बंधन में बाँध रखा है और राष्ट्रीयता के सूत्रों को विश्वरूपित होने से रोका है।

6. संचार क्रांति

नई सहस्राब्दी के आरंभ के साथ विश्व की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ तेजी से बदली हैं। आज विश्व में सभी देशों के बीच परस्पर वर्चस्व की होड़ लगी है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी में आए विकास ने पूरे विश्व को अपनी जद में ले लिया है। ऐसी स्थिति में अनुवाद की विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के बीच संचार स्थापित करने और उन उपराष्ट्रीयताओं एवं मानव सभ्यताओं के निर्माण और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका है।

आज विश्व में प्रौद्योगिकी, विज्ञान, जनसंचार, व्यापार, वाणिज्य और प्रबंधन का क्षेत्र सबसे अधिक विकासशील है। निगमित व्यापार और प्रबंधन प्रणालियों ने एक नई नव-धनाढ्य सभ्यता को विकसित किया है। संचार-क्रांति ने विश्व को विश्व ग्राम में बदलकर रख दिया है। दूरियाँ सिमट गई हैं। संचार क्रांति ने मनुष्यों को उपग्रहों के माध्यम से जोड़ दिया है। आज घर बैठे हजारों मील दूर स्थित लोगों से पलक झपकते ही सीधे संपर्क साधा जा सकता है। मानव जीवन में एक सम्पूर्ण क्रांति आ गयी है। भौगोलिक दूरियाँ समाप्त हो गई हैं। संचार क्रांति ने विभिन्न भाषा भाषियों को परस्पर जोड़ने के वैज्ञानिक उपकरण तो बनाकर दे दिये लेकिन इनकी सक्षमता भाषिक विभेद को दूर करने लायक नहीं है। इस भाषिक विभेद और भिन्नता को दूर करने का एक मात्र उपाय अनुवाद ही है। अंतः संचार क्रांति का प्राण तत्व अनुवाद ही है। भाषाओं की बहुल स्थिति में सामंजस्य पैदा करने वाला एक मात्र माध्यम अनुवाद है। भाषिक विभेद को

अनुवाद के माध्यम से दूर किया जा सकता है। विश्व के सिमटते हुए मानचित्र पर भौगोलिक दूरियाँ जैसे समाप्त हो रही हैं वैसे ही अनुवाद के द्वारा भाषिक दूरियाँ भी खत्म हो सकती हैं। विविधता में एकता लाने के लिए सांस्कृतिक, साहित्यिक और राष्ट्रीय गठबंधन की संकल्पना में अनुवाद सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। अनुवाद ने प्रत्येक संचार माध्यमों का कार्य आसान किया है तथा उसमें व्यापकता लाने के प्रयास में भी है। छोटे गाँवों और कस्बों से लेकर शहरों और महानगरों तक अनुवाद, संचार के किसी न किसी साधन के साथ उपलब्ध है। अनुवाद ने संचार माध्यमों के तकनीकी युग में नयापन का सूत्रपात किया है।

आज का युग संचार क्रांति का युग है। जन-संचार के माध्यम मानव जीवन पर हावी हो गए हैं। टीवी, रेडियो, इंटरनेट, समाचार-पत्र, पत्र-पत्रिकाएँ, फिल्म, ये सब आज मानव जीवन के अनिवार्य अंग बन गए हैं। विश्व में आज हर देश और हर समाज में इनका प्रवेश हो गया है। आज समाचार और संदेश चौबीसों घंटे प्राप्त होते हैं। टीवी के चैनल और रेडियो के कार्यक्रम चौबीसों घंटे चलते हैं। समाचार पत्र के एकाधिक संस्करण हर रोज निकाले जाते हैं। सम्पन्न देशों में रात्रि संस्कारण भी प्रकाशित होते हैं। अर्थात् जनसंचार के माध्यम हर पल, हर वक्त कार्यरत रहते हैं। विश्व की अनगिनत भाषाओं में ये चैनल और स्रोत कार्य करते हैं। स्रोत भाषाओं में एकत्रित सामग्री का अनुवाद करके उनका प्रसारण किया जाता है। आज विश्व के संचार बाजार में असंख्य अनुवादक निर्विराम कार्य कर रहे हैं जिनके द्वारा संसार के हर कोने का समाचार या संदेश कुछ ही क्षणों में विश्व के अन्य हिस्सों में हर भाषा में अविलंब पहुँचता है।

यह अनुवाद का ही चमत्कार है और अनुवाद प्रक्रिया की ही देन है। यदि अनुवाद जैसी प्रक्रिया न होती तो संचार क्रांति भी संभव नहीं होती। मीडिया ने नई शताब्दी में मानव जीवन में उथल-पुथल मचा दी है। राष्ट्रों की राजनीति को प्रभावित किया है। राष्ट्रों के प्रमुख अपने वक्तव्यों को अपनी भाषा में प्रस्तुत करते हैं तो उन्हें सारा विश्व अनुवाद के ही माध्यम से समझ पाता है और तत्काल उस पर अपनी प्रतिक्रिया दर्ज करता है। संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे अंतर्राष्ट्रीय मंच से राष्ट्रों के प्रतिनिधियों के भाषण तत्काल आशु अनुवाद द्वारा विश्व की सभी भाषाओं में उपलब्ध कराया जाता है। इसमें दूरसंचार के माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण है। कार्यक्रमों के सीधे प्रसारण के लिए संचार माध्यमों के द्वारा प्रयुक्त अत्याधुनिक तकनीक जिम्मेदार है जो इस तरह के उपकरण तैयार कर विश्व को तत्काल जोड़ती है। अनुवाद के बिना हम विभिन्न देशों में होने वाले परिवर्तनों को वहाँ की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियों में होने वाले बदलावों को कदापि नहीं आत्मसात कर पाते।

7. भावात्मक एकता

विश्व समाज भिन्न भिन्न राष्ट्रों, धर्मों, वर्णों और जातियों में विभक्त है। हर राष्ट्र और समाज की अपनी भाषिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक पहचान होती है। राष्ट्र की पहचान उसकी अपनी राष्ट्रभाषा से होती है। इस विभाजित मानव समुदाय को भावात्मक और भावनात्मक धरातल पर जोड़कर उनके मध्य बनी हुई विषमता की खाई को पाटना ही अनुवाद का प्रधान लक्ष्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनुवाद एक सेतु बन गया है। इस विभाजक अंतराल को खत्म कर विभिन्न संस्कृतियों में भावात्मक एकता स्थापित करने के लिए अनुवाद एक सशक्त साधन के रूप में उपलब्ध है। राष्ट्रीय, भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक और जातीय अलगाव को खत्म कर भावात्मक एकीकरण के लिए अनुवाद की उपयोगिता आज विश्व स्तर पर सिद्ध हो चुकी है। भाषिक विभिन्नता की दरार भी अनुवाद से ही मिटाई जा सकती है इसलिए अनुवाद को एक सशक्त सेतु माना गया है। भावात्मक एकता से मनुष्य में सहृदयता और सदाशयता का विकास और मानव जाति का कल्याण संभव है। अनुवाद के माध्यम से परस्पर एक दूसरे की सांस्कृतिक विरासत को साहित्य के माध्यम से समझकर सहिष्णुता का संवर्धन किया जा सकता है। समाज में व्याप्त भाषिक विभाजन से उत्पन्न खाई को पाटने तथा भिन्न भिन्न संस्कृतियों के भावात्मक एकीकरण के लिए अनुवाद एक असाधारण खोज है।

8. राष्ट्रीय एकात्मकता

राष्ट्रीय एकात्मकता आज की अनिवार्य आवश्यकता है। भारत जैसे बहुभाषी देश के लिए अनुवाद अत्यंत प्रभावी और उपयोगी माध्यम है जिससे कि देश में व्याप्त भाषिक विभेद को दूर करके जन सामान्य में परस्पर एक दूसरे की भाषा और संस्कृति के प्रति सद्भावना जागृत हो सके। अनुवाद जैसे सशक्त और कारगर माध्यम की आवश्यकता सबसे अधिक भारत को ही है। भारतीय संदर्भ में प्रादेशिक और क्षेत्रीय भाषाओं को परस्पर एक दूसरे के निकट लाने का सबसे व्यवहारिक माध्यम अनुवाद ही है। राष्ट्रीय एकात्मकता के लिए भारतीय भाषाओं में उपलब्ध साहित्य का अनुवाद हिंदी और हिंदी साहित्य का इतर भारतीय भाषाओं में अनुवाद राष्ट्रीय हित में आवश्यक है। स्वैच्छिक रूप से भाषा-प्रेमी विद्वान अपनी अभिरुचि के अनुकूल साहित्यिक अनुवाद के कार्य में संलग्न हैं लेकिन अनुवाद के क्षेत्र को सुसंगठित होने की आवश्यकता है। भारत में अनुवाद कार्य राष्ट्रीय स्तर पर सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं के द्वारा संगठित रूप से आयोजित करने की नितांत आवश्यकता है।

विविधताओं से युक्त भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश में एकात्मकता की परम आवश्यकता है और अनुवाद साहित्यिक धरातल पर इस आवश्यकता की पूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम है। अनुवाद वह सेतु है जो साहित्यिक आदान-प्रदान एवं भावनात्मक एकात्मकताएँ भाषा समृद्धि एवं तुलनात्मक अध्ययन तथा राष्ट्रीय सौमनस्य की संकल्पनाओं को साकार कर हमें वृहत्तर साहित्य-जगत् से जोड़ता है।

9. बाज़ारवाद और अनुवाद

आज जबकि पूरी दुनिया में अपनी पहुँच रखने वाली कम्पनियाँ स्थानीय भाषा में अपने ग्राहकों से सम्पर्क करना चाहती हैं तो अनुवाद कार्य की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो उठती है। भूमंडलीकृत परिदृश्य में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने इस बात का सर्वेक्षण किया और वे इस निष्कर्ष पर पहुँची हैं कि यदि हमें अपना माल ज्यादा लोगों तक पहुँचाना है तो वहीं की भाषा में उत्पादों की जानकारी देनी होगी। यही कारण है कि आज विदेशी कम्पनियों ने अपने उत्पादों के प्रचार-प्रसार के लिए अनुवाद को अपनाकर भारतीय भाषाओं में अपने उत्पादों की जानकारी देना शुरू कर दिया है।

भारत में वैश्वीकरण की बाज़ारवादी नीति के अंतर्गत बड़ी तेज़ी से आर्थिक विकास हो रहा है। व्यापार एवं वाणिज्य का क्षेत्र सबसे बड़ा क्षेत्र है जहाँ अनुवाद की सर्वाधिक मांग है। भारत जैसे बहुभाषी देश में विदेशी और स्वदेशी उत्पादों की बिक्री केवल किसी एक भाषा के माध्यम से नहीं की जा सकती। भाषा सम्प्रेषण का माध्यम होती है। किसी भी उत्पाद को बेचने के लिए विज्ञापन प्रणाली के द्वारा उस उत्पाद का प्रचार किया जाता है। यह प्रचार सामग्री अनेक भाषाओं में पेशेवर विज्ञापन विशेषज्ञ तैयार करते हैं। विज्ञापन का बाज़ार अनुवाद पर ही आधारित होता है। विश्व का सारा बाज़ार अनुवाद पर आश्रित है। ये अनुवाद स्वदेशी और विदेशी भाषाओं में भी करवाए जाते हैं। इस कार्य के लिए निजी क्षेत्र में बड़ी विज्ञापन कंपनियाँ बाज़ार में उतर गई हैं। इस तरह अनुवाद का भी एक बहुत बड़ा बाज़ार है जो कि करोड़ों रुपयों का व्यापार करता है। विज्ञापन जगत में अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर अनुवाद भी एक उद्योग के रूप में उभरा है आज।

10. भारत में साहित्येतर अनुवाद की भी बहुत अधिक आवश्यकता है। साहित्येतर अनुवाद की आवश्यकता विभिन्न काम काज के क्षेत्रों के लिए उपयोगी होता है। भाषा की प्रयोजनमूलकता उसके विभिन्न प्रकार्यात्मक अनुप्रयोगों से ही आँकी जा सकती है। भारत में अंग्रेज़ी और भारतीय भाषाओं के मध्य अनुवाद की आवश्यकता अधिक है क्योंकि देश में कामकाज की व्यवहारिक भाषा अंग्रेज़ी है। इसलिए काम काज के क्षेत्र में प्रयुक्त अंग्रेज़ी की अभिव्यक्तियों को जन सामान्य के लिए बोधगम्य बनाने के लिए अनुवाद का आश्रय लेना पड़ता है।

11. कंप्यूटर का प्रवेश :

आज का युग संचार के क्षेत्र में कंप्यूटर की प्रधानता का युग है। अनुवाद प्रक्रिया को सुगम और अत्यधिक गतिशील बनाने के लिए कंप्यूटर के प्रयोग की दिशा में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुसंधान हो रहे हैं। कंप्यूटर द्वारा सम्पन्न अनुवाद को मशीन अनुवाद कहा जाता है। विश्व की अग्रणी कंप्यूटर संस्थाएँ आज हर तरह के पाठ के अनुवाद के लिए कंप्यूटर का प्रयोग सफलतापूर्वक एवं कारगर तरीके से करने के लिए प्रयासरत हैं। वह दिन दूर नहीं जब विश्व की सभी भाषाओं में अंतर भाषिक अनुवाद मशीन द्वारा संभव हो जाएगा। आज कंप्यूटर साधित अनुवाद कुछ सीमित प्रकार्यों के लिए किया जा रहा है। सीमित शब्दावली के साथ विशेष क्षेत्रों में कंप्यूटर अनुवाद किया जा रहा है। इसके लिए विशेष रूप से कृत्रिम बुद्धि का विकास किया जा रहा है।

12. अंतर्राष्ट्रीय विवादों को सुलझाने में भिन्न भाषा-भाषी समुदायों अथवा देशों के मध्य संधि वार्ताएँ समझौते और करार आदि के लिए अनुवाद का प्रयोग किया जाता है। आज के तेज़ी से बदलते हुए अंतर्राष्ट्रीय परिवेश में अनुवाद की भूमिका बहुआयामी है। भाषा जिस तरह से सम्प्रेषण का माध्यम है अनुवाद भी उसी सम्प्रेषण को सार्थक और सशक्त बनाने का सहायक औज़ार है। आज वैश्वीकरण के दौर में बहुभाषी होना समय की आवश्यकता है और बहु-भाषिकता को समन्वय के सूत्र में बांधने के लिए अनुवाद की आवश्यकता अपरिहार्य है।

13. फिल्मों की डबिंग और सब-टाइटलिंग की प्रणाली अनुवाद की प्रक्रिया पर ही आधारित है। आज विश्व का फिल्म उद्योग अनुवाद की माध्यम से माला-माला हो रहा है। अनुवाद-कर्म राष्ट्रसेवा का कर्म है। यह अनुवादक ही है जो दो संस्कृतियों/राज्यों एवं विचारधाराओं के बीच श्सेतु का काम करता है। और तो और यह अनुवादक ही है जो भौगोलिक सीमाओं को लांघकर भाषाओं के बीच सौहार्द एवं सामंजस्य एवं सद्भाव को स्थापित करता है तथा हमें एकात्मकता एवं वैश्वीकरण की भावनाओं से ओतप्रोत कर देता है।

प्राचीनकाल से लेकर अब तक अनुवाद ने कई मंजिलें तय की हैं। यह सच है कि आधुनिककाल में अनुवाद को जो गति मिली है वह अभूतपूर्व है। मगर यह भी उतना ही सत्य है कि अनुवाद की आवश्यकता हर युग में हर काल में तथा हर स्थान पर अनुभव की जाती रही है। विश्व में द्रुतगति से हो रहे विज्ञान और तकनीकी तथा साहित्य एवं धर्म-दर्शन एवं अर्थशास्त्र आदि ज्ञान-विज्ञान में विकास ने अनुवाद की आवश्यकता को बहुत अधिक बढ़ावा दिया है। सभ्यता के मौजूदा दौर में अनुवाद की अपरिहार्यता का अनुभव इसी कारण तीव्रता से किया जा रहा है कि संसार के किसी भी देश/भाषा और व्यक्ति के लिए शेष विश्व की तमाम उपलब्धियों से जुड़ने के लिए अनुवाद से बहेतर कोई माध्यम नहीं है। भाषाओं के पारस्परिक आदान-प्रदान से मनुष्य के वैचारिक तथा अभिव्यंजनामूलक स्वरूप में परिवर्तन द्वारा अनुवाद ने अपनी उपयोगिता प्रमाणित की है। राष्ट्रीय एकता से लेकर अन्तरराष्ट्रीय समीपता तक अनेक सामाजिक सूत्रों का नियमन अनुवाद से संभव होता है। ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में संसार की प्रगति और उपलब्धियों की अद्यतन जानकारी के लिए भी मनुष्य अनुवाद पर निर्भर है। नये तकनीकी संसाधनों और अधुनातन अनुसंधानों से परिचित होने के लिए अनुवाद ही सर्वसुलभ माध्यम है। शेष विश्व के सामने अपनी पहचान सुरक्षित रखने और अनवरत विकासमान सभ्यता की दौड़ में पिछड़ने से बचने के लिए अनुवाद का उपयोग करना मनुष्य और समाज के लिए परम आवश्यक है। इस पृष्ठभूमि में अनुवाद के वर्तमान और भविष्य के बारे में कोई संदेह नहीं होनी चाहिए। अनुवाद की उपादेयता आज की ज़रूरत है और आने वाले कल का स्वाभाविक विकास-उपकरण होगा।

आने वाली शताब्दी अन्तरराष्ट्रीय संस्कृति की शताब्दी होगी और सम्प्रेषण के नये-नये माध्यमों व आविष्कारों से वैश्वीकरण के नित्य नए क्षितिज उद्घाटित होंगे। इस सारी प्रक्रिया में अनुवाद की महती भूमिका होगी। इससे श्वसुधैव कुटुम्बकम् की उपनिषदीय अवधारणा साकार होगी। इस दृष्टि से सम्प्रेषण-व्यापार के उन्नायक के रूप में अनुवादक एवं अनुवाद की भूमिका निर्विवाद रूप से अति महत्वपूर्ण सिद्ध होती है।

वैश्वीकरण के दौर में विश्व मानव को सारे विभेदों/विषमताओं को भुलाकर यदि परस्पर निकट आना हो तो भाषिक अवरोधों को मिटाना होगा और यह केवल अनुवाद से ही संभव है।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. डॉ. रीतारानी पालीवाल : अनुवाद की सामाजिक भूमिकाएँ हिंदी बुक सेंटरए 4६.बीए आसफ अली रोडए नई दिल्ली-110002.
2. संपादक डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी : अनुवाद विज्ञानए प्रकाशन संस्थानए 715६21ए दयानंद मार्ग दरियागंजए नई दिल्ली-110002
3. डॉ. माणिक मृगेश : भूमंडलीकरणए निजीकरण व हिंदीए वाणी प्रकाशनए 21ए दरियागंजए नई दिल्ली-110002
4. डॉ. आरसू, साहित्यानुवाद: संवाद और संवेदनाए पृ० 85